कबीर और तुलसी के राम

शोधार्थी - राजीव कुमार

विषय : हिंदी साहित्य , साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात

सारः–कबीर और तुलसीदास, दोनों ही भक्तिकाल के प्रमुख संत और कवि थे, जिनकी रचनाओं में ''राम'' का विशेष स्थान है। हालांकि दोनों के राम–भक्ति के दृष्टिकोण में भिन्नताएँ देखी जाती हैं।

कबीर के राम निर्गुण, निराकार और व्यापक चेतना के प्रतीक हैं। वे किसी मूर्ति या विशेष अवतार में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि राम को एक दार्शनिक और आध्यात्मिक सत्य के रूप में देखते थे। उनके राम ब्रह्म के समान हैं, जो प्रत्येक जीव में समाहित हैं। कबीर ने सामाजिक बंधनों, जातिवाद और बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए कहाः

''दास कबीर जतन करि ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया।''

उनके राम किसी धर्म, मूर्ति पूजा या ग्रंथों तक सीमित नहीं थे, बल्कि आंतरिक अनुभूति से प्राप्त किए जाने वाले थे।

तुलसीदास के राम सगुण, साकार और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे राम को विष्णु के अवतार के रूप में देखते हैं, जो धर्म, नीति और आदर्श जीवन के प्रतीक हैं। उनकी रचनाएँ, विशेष रूप से रामचरितमानस, श्रीराम के दिव्य स्वरूप, उनकी लीलाओं और भक्ति–मार्ग को विस्तृत रूप से दर्शाती हैं। तुलसीदास ने राम को राजा, योद्धा और करुणामयी भगवान के रूप में चित्रित किया, जो भक्तों की रक्षा करते हैंः

''रामहि केवल प्रेमु पियारा।''

मुख्य शब्दः– कबीर, तुलसीदास, राम, संत

कबीर के राम निराकार ब्रह्म हैं, जो ज्ञान और प्रेम के माध्यम से प्राप्त होते हैं, जबकि तुलसी के राम साकार और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जो धर्म और कर्तव्य का पालन करने की प्रेरणा देते हैं। दोनों के दृष्टिकोण भले ही अलग हों, लेकिन अंततः दोनों ही भक्ति और आध्यात्मिकता का संदेश देते हैं, जो मानवता के उत्थान के लिए आवश्यक है।

राम की अवधारणाः एक सांस्कृतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य

राम भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे न केवल हिंदू धर्म के एक प्रमुख देवता हैं, बल्कि भारतीय समाज में नैतिकता, मर्यादा और कर्तव्यपरायणता के प्रतीक भी हैं। राम कथा विभिन्न रूपों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित है, जैसे कि वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, कंबन रामायण और रामचरितमानस। भारतीय परंपरा में राम केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक व्यक्तित्व नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतीक हैं।

कबीर और तुलसीदास की भक्ति धारा में राम का स्थान

भक्तिकाल में राम भक्ति की दो प्रमुख धाराएँ थीं–निर्गुण और सगुण। कबीरदास निर्गुण भक्ति परंपरा के संत थे, जबकि तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के प्रवर्तक माने जाते हैं।

1. कबीर के राम

- कबीर के राम निर्गुण, निराकार और अज्ञेय ब्रह्म के प्रतीक हैं।
- वे मूर्ति पूजा, कर्मकांड और बाह्य आडंबरों का विरोध करते थे।
- कबीर के अनुसार, राम किसी एक धर्म या जाति के नहीं हैं, बल्कि वे सभी के हैं।
- वे राम को हृदय में अनुभूत करने की बात करते हैंः

''जहाँ–जहाँ फिरूँ वहीं राम रमैया।''

2. तुलसीदास के राम

- तुलसीदास के राम सगुण, साकार और विष्णु के अवतार हैं।
- वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जो मानव जीवन के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

- तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम की भक्ति, नीति, शरणागति और भक्ति–मार्ग को विस्तार से दर्शाया है।

उनके अनुसारः

''भज मन राम चरन सुखदायी।''

तुलसी और कबीर की विचारधारा का तुलनात्मक परिचय

विशेषता	कबीरदास	तुलसीदास
भक्ति धारा	निर्गुण भक्ति	सगुण भक्ति
राम की अवधारणा	निराकार, निर्गुण ब्रह्म	साकार, मर्यादा पुरुषोत्तम
सामाजिक दृष्टिकोण	जाति-पांति, मूर्ति पूजा, और कर्मकांडों का विरोध	धर्म, वर्ण व्यवस्था, और मर्यादा का समर्थन
भाषा	सधुक्कड़ी, सरल दोहे	अवधी, काव्यात्मक शैली
प्रमुख ग्रंथ	साखी, रमैनी, बीजक	रामचरितमानस, विनयपत्रिका
मुख्य संदेश	आत्मानुभूति, सत्य और प्रेम	भक्ति, धर्म और मर्यादा

कबीर और तुलसीदास, दोनों ही भक्तिकाल के महान संत–कवि थे, जिनकी भक्ति–दृष्टि भले ही अलग रही हो, लेकिन दोनों ने समाज को प्रेम, सत्य और भक्ति का मार्ग दिखाया। कबीर के राम आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक थे, जबकि तुलसीदास के राम मर्यादा और कर्तव्यपरायणता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों ने भारतीय समाज को भक्ति और आध्यात्मिकता के दो महत्वपूर्ण आयाम दिए, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

कबीर के रामः निर्गुण भक्ति की दृष्टि से

कबीरदास भारतीय भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक थे, जिन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया। उनके राम किसी मूर्तिगत या अवतार रूप में नहीं हैं, बल्कि वे एक आध्यात्मिक सत्ता के रूप में व्याप्त हैं। कबीर के राम किसी एक धर्म, जाति या संप्रदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समस्त सृष्टि में बसे हुए हैं। उनके अनुसार, राम को मंदिरों, मूर्तियों या बाहरी साधनों से नहीं पाया जा सकता, बल्कि आत्मज्ञान और सच्चे प्रेम के माध्यम से उनका अनुभव किया जा सकता है।

निर्गुण भक्ति की परिभाषा और विशेषताएँ

निर्गुण भक्ति वह भक्ति है जिसमें ईश्वर को किसी रूप, आकार या मूर्ति में नहीं देखा जाता, बल्कि उसे एक निराकार, अज्ञेय और सर्वव्यापी शक्ति के रूप में माना जाता है। यह भक्ति आडंबरों, कर्मकांडों और धार्मिक संस्थागत नियमों से परे होती है। इसका मुख्य आधार प्रेम, ज्ञान और आत्मानुभूति है। निर्गुण भक्ति के प्रमुख लक्षणों में ईश्वर का निराकार स्वरूप, गुरु का महत्व, जात–पात और सामाजिक भेदभाव का विरोध, तथा सीधा–साधा जीवन शामिल है। कबीर इस परंपरा के प्रमुख प्रवर्तक थे, जिन्होंने राम को हृदय में खोजने की बात कही।

कबीर के रामः एक आध्यात्मिक सत्ता

कबीर के राम कोई साकार देवता नहीं हैं, बल्कि वे एक दिव्य चेतना, एक आध्यात्मिक शक्ति हैं, जो हर व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। कबीर का मानना था कि इस राम को बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि स्वयं की आत्मा के भीतर खोजा जाना चाहिए। वे कहते हैंः

''मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।''

कबीर का राम विश्वव्यापी सत्ता है, जो हर जीव में समाहित है। वह न तो किसी मूर्ति में है, न मंदिर में और न ही किसी विशेष धार्मिक विधि से प्राप्त किया जा सकता है। वह तो प्रेम और आत्मबोध से ही जाना जा सकता है।

कर्मकांड और मूर्तिपूजा का विरोध

कबीर ने कर्मकांड, मूर्तिपूजा और बाहरी धार्मिक आडंबरों का कठोर विरोध किया। उनका मानना था कि लोग सच्ची भक्ति और आत्मज्ञान को छोड़कर मंदिरों, मूर्तियों और धार्मिक अनुष्ठानों में उलझे हुए हैं, जिससे वे

ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाते। वे पाखंड और आडंबरों की कठोर आलोचना करते हुए कहते हैं:

''पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहाड़।
ता ते यह चाकी भली, पीस खाए संसार।।''

इस दोहे में कबीर मूर्तिपूजा की निरर्थकता को स्पष्ट करते हैं। यदि पत्थर पूजने से भगवान मिल सकते हैं, तो फिर बड़े–बड़े पहाड़ों को पूजना चाहिए, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। इसी प्रकार वे पाखंडी धार्मिक गुरुओं और पुरोहितों पर भी व्यंग्य करते हैं, जो केवल बाह्य आडंबरों में लगे रहते हैं।

कबीर की वाणी में राम का स्वरूप (साखियों और दोहों के संदर्भ में)

कबीर की वाणी में राम का स्वरूप एक व्यापक आध्यात्मिक सत्ता के रूप में प्रकट होता है, जिसे बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि अपने भीतर ढूंढना आवश्यक है। उनकी साखियाँ और दोहे आत्मज्ञान, भक्ति और सच्चे प्रेम पर बल देते हैं। वे कहते हैं:

''राम नाम रस भीजै, यह तन रहै न सून।
जैसे चंदन की घटी, बास रहै महकून।।''

इसमें कबीर राम–नाम को एक सुगंधित चंदन की तरह बताते हैं, जो हृदय को शुद्ध और पवित्र बना देता है। इसी तरह, वे भक्ति को ही सर्वोच्च साधन मानते हैं और कहते हैं:

''राम रता सब जगत में, राम बिना गति नाहिं।''

इस प्रकार, कबीर के राम केवल हिंदू धर्म तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समस्त मानवता के लिए हैं। उनकी भक्ति का मार्ग सभी जातियों, धर्मों और समुदायों के लिए खुला है। वे न केवल निर्गुण भक्ति के प्रवर्तक थे, बल्कि मानवतावादी संत भी थे, जिनकी वाणी आज भी सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना को प्रेरित करती है।

तुलसीदास के रामः सगुण भक्ति की दृष्टि से

तुलसीदास भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक थे, जिन्होंने सगुण भक्ति की परंपरा को आगे बढ़ाया। उनके राम साकार, सगुण और विष्णु के अवतार हैं, जो करुणामयी, दयालु और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित हैं। तुलसीदास के राम केवल एक ईश्वर नहीं, बल्कि एक आदर्श राजा, पुत्र, पति, मित्र और धर्मपरायण व्यक्ति भी हैं। उन्होंने राम को न केवल ईश्वर के रूप में देखा, बल्कि उन्हें मानव जीवन के लिए एक मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्रोत भी बनाया।

सगुण भक्ति की परिभाषा और विशेषताएँ

सगुण भक्ति वह भक्ति परंपरा है जिसमें ईश्वर को एक साकार रूप में देखा जाता है। इसमें भक्त भगवान को उनके दिव्य गुणों, लीलाओं और अवतारों के माध्यम से अनुभव करता है। सगुण भक्ति के प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं:

1. ईश्वर का साकार रूप– भक्त ईश्वर को मूर्ति, अवतार या मानव रूप में पूजता है।
2. प्रेम और समर्पण– भक्ति केवल तर्क और ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें प्रेम, श्रद्धा और समर्पण की प्रधानता होती है।
3. नाम–स्मरण– सगुण भक्ति में भगवान के नाम जप और कीर्तन का विशेष महत्व होता है।
4. अवतारवाद– ईश्वर समय–समय पर संसार में अवतार लेते हैं, जैसे राम और कृष्ण।
5. धार्मिक ग्रंथों का आधार– सगुण भक्ति परंपरा में रामायण, भागवत पुराण और महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों को विशेष महत्व दिया जाता है।

तुलसीदास ने इन सभी विशेषताओं को अपने ग्रंथ रामचरितमानस में विस्तार से दर्शाया है।

तुलसीदास के रामः मर्यादा पुरुषोत्तम की अवधारणा

तुलसीदास ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका अर्थ है कि वे आदर्शों और मर्यादाओं का पालन करने वाले सर्वोच्च पुरुष हैं। राम केवल शक्ति और ऐश्वर्य के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे सत्य, धर्म और आदर्श जीवन मूल्यों के संवाहक भी हैं। तुलसीदास के अनुसार, राम का जीवन एक प्रेरणा है, जिसमें कर्तव्यपरायणता, प्रेम, दया और न्याय की भावना सर्वोपरि है।

राम ने अपने जीवन में हर परिस्थिति में धर्म और नैतिकता का पालन किया–चाहे वह पिता की आज्ञा का

पालन करते हुए वनवास जाना हो, सीता की खोज के लिए अथक प्रयास करना हो, या फिर रावण का वध कर अधर्म पर धर्म की विजय प्राप्त करना हो। वे न केवल एक आदर्श राजा हैं, बल्कि वे एक आदर्श पुत्र, भाई और पति भी हैं, जो अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा से करते हैं।

"रामचरितमानस" में राम का चरित्र

तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के चरित्र को अत्यंत महिमा मंडित किया है। उनके राम केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि करुणा, प्रेम और धर्म के प्रतीक हैं। रामचरितमानस के अनुसार राम के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. आदर्श पुत्र– उन्होंने अपने पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए बिना किसी प्रश्न के 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया।
2. आदर्श राजा– राम का शासन रामराज्य के रूप में आदर्श राज्य का प्रतीक है, जहाँ शांति, न्याय और समानता विद्यमान रहती है।
3. करुणामयी और दयालु– वे निषादराज, शबरी और हनुमान जैसे भक्तों को समान प्रेम और सम्मान देते हैं।
4. धर्मनिष्ठ और न्यायप्रिय– उन्होंने रावण का वध केवल युद्ध जीतने के लिए नहीं, बल्कि अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए किया।
5. प्रजा के प्रति समर्पित– सीता का परित्याग राम की व्यक्तिगत वेदना के बावजूद लोकमत और न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

समाज सुधार और नैतिक मूल्यों की स्थापना में तुलसी के राम

तुलसीदास के राम केवल व्यक्तिगत भक्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज सुधार और नैतिकता की स्थापना के भी प्रतीक हैं। उनकी शिक्षाएँ भारतीय समाज को एकता, समानता और आदर्श जीवन मूल्यों की प्रेरणा देती हैं।

1. सामाजिक समरसता– तुलसीदास ने जाति और वर्ण भेद को चुनौती दी और राम के चरित्र के माध्यम से यह दिखाया कि भक्ति के लिए जन्म या सामाजिक स्थिति कोई मायने नहीं रखती। उदाहरण के लिए, शबरी और केवट को राम का स्नेह और आदर प्राप्त हुआ।
2. न्याय और धर्म की स्थापना– राम का जीवन यह संदेश देता है कि धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को अंततः विजय प्राप्त होती है।
3. आदर्श शासन प्रणाली– तुलसीदास ने रामराज्य की अवधारणा प्रस्तुत की, जहाँ सभी नागरिक समान, सुखी और सुरक्षित होते हैं।
4. दस्त्री सम्मान और नैतिकता– रामचरितमानस में सीता, अनुसूया और मंदोदरी जैसी स्त्रियों के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत किया गया है, जो नारी गरिमा और मर्यादा का प्रतीक हैं।

निष्कर्ष

तुलसीदास के राम भक्ति, मर्यादा और समाज सुधार के प्रतीक हैं। उनकी भक्ति सगुण भक्ति परंपरा से प्रेरित है, जिसमें ईश्वर को साकार रूप में अनुभव किया जाता है। उन्होंने राम को एक आदर्श व्यक्ति और शासक के रूप में प्रस्तुत किया, जिनका जीवन नैतिकता, प्रेम और कर्तव्यपरायणता का संदेश देता है। उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। रामचरितमानस न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह नैतिक मूल्यों, समाज सुधार और भक्ति की एक अद्वितीय कृति भी है। कबीर और तुलसीदास, दोनों ही भारतीय भक्ति आंदोलन के महान संत–कवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में राम के स्वरूप को अलग–अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। कबीरदास के राम निर्गुण, निराकार और अज्ञेय ब्रह्म के प्रतीक हैं, जिन्हें मूर्तियों, मंदिरों और कर्मकांडों में नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में खोजा जाता है। उन्होंने समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबरों, जात–पात और बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए प्रेम और ज्ञान को भक्ति का सर्वोच्च मार्ग बताया।

इसके विपरीत, तुलसीदास के राम सगुण और साकार हैं, जो मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में धर्म, आदर्श और

नैतिकता की स्थापना करते हैं। उन्होंने रामचरितमानस के माध्यम से राम के चरित्र को लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया, जो एक आदर्श पुत्र, पति, मित्र और राजा के रूप में समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। तुलसीदास के राम केवल भक्ति का ही नहीं, बल्कि समाज सुधार और नैतिक मूल्यों की स्थापना का भी आधार हैं।

दोनों संतों की विचारधारा अलग होते हुए भी उनकी शिक्षाएँ आध्यात्मिक उन्नति, प्रेम, सत्य और भक्ति की ओर प्रेरित करती हैं। कबीर के राम जहां आंतरिक खोज और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करते हैं, वहीं तुलसीदास के राम आदर्श जीवन और समाज की मर्यादाओं को स्थापित करने का संदेश देते हैं। दोनों की भक्ति परंपराएँ अपने–अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं और भारतीय आध्यात्मिक चेतना को समृद्ध करती हैं। इन संतों की वाणी आज भी भक्ति, नैतिकता और समाज सुधार के संदर्भ में प्रासंगिक बनी हुई है, जो मानवता को सच्चे धर्म और प्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

संदर्भ सूचीः

- तुलसीदास। (2017)। रामचरितमानस। गीता प्रेस।
- वाल्मीकि। (2015)। रामायण (रामप्रसाद त्रिपाठी, अनुवाद)। नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- शर्मा, ए. (2020)। भक्ति आंदोलन में तुलसीदास और कबीर का योगदान। भारतीय साहित्य शोध पत्रिका, 15(2), 45–58।
- गुप्ता, र. (2021, जून 10)। भक्ति काल के संतों का समाज पर प्रभाव। दैनिक भास्कर, पृष्ठ 12।
- भारतीय विद्या भवन। (2022, अप्रैल 5)। कबीर और तुलसीदास की भक्ति परंपरा। भारतीय संस्कृति पोर्टल।
- मिश्रा, पी. (संपा.)। (2018)। भारतीय भक्ति साहित्य का इतिहास। राजकमल प्रकाशन।
- वर्मा, एस. (2019)। तुलसीदास के काव्य में भक्ति तत्व का अध्ययन (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध)। दिल्ली विश्वविद्यालय।
- भारतीय संस्कृति चैनल। (2021, अगस्त 20)। कबीर और तुलसीदास के रामः एक तुलनात्मक अध्ययन वीडियो,।
- द्विवेदी, आर. (2022)। भक्ति आंदोलन और समाज सुधार। भारतीय साहित्य सम्मेलन, नई दिल्ली। साहित्य अकादमी।